

आली मैंने हरि नाम गुन गाये ॥२॥
 पग पखारिहों. इन नैनन से
 मोतिन से ढरकाये

आली मैंने

भाहों मास बदरिया कारी
 घन के श्याम न आये

आली मैंने

भई. घनघोर घटा अँधियारी
 दामिनी शोर मचाये

आली मैंने

श्यामल घन गरजत अँगना में
 सहज. नीर भर लाये

आली मैंने

ओ "श्रीबाबाश्री" मत करो ठिठोली
 प्रीत लगा पट्टाये

आली मैंने

आली मोरे अब लौ श्याम न आये
 आली मैंने हरि नाम गुन गाये